

गौतम बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डालें

गौतम बुद्ध, जिन्हें सिद्धार्थ गौतम के नाम से भी जाना जाता है, बौद्ध धर्म के संस्थापक और महान आध्यात्मिक विचारक थे। उनका जीवन मानवता, करुणा और आत्मज्ञान का प्रतीक है।

---

जन्म और प्रारंभिक जीवन

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई.पू. में लुंबिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ था। उनके पिता का नाम राजा शुद्धोधन था, जो शाक्य गणराज्य के शासक थे, और माता का नाम माया देवी था। जन्म के सातवें दिन ही उनकी माता का देहांत हो गया, और उनका पालन-पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।

राजकुमार सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा से हुआ और उन्हें एक पुत्र राहुल हुआ।

---

वैराग्य की उत्पत्ति

सिद्धार्थ राजमहल में सुख-सुविधाओं के बीच पले, परंतु एक दिन भ्रमण के दौरान उन्होंने चार दृश्य देखे —

1. एक बूढ़ा व्यक्ति,
2. एक बीमार व्यक्ति,
3. एक मृत व्यक्ति, और
4. एक संत (संन्यासी)।

इन दृश्यों ने उन्हें जीवन की नश्वरता और दुख का गहरा बोध कराया। इसी अनुभव ने उन्हें वैराग्य की ओर प्रेरित किया।

---

महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग)

29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने राजमहल, पत्नी और पुत्र को त्यागकर सत्य की खोज के लिए घर छोड़ दिया। यही घटना महाभिनिष्क्रमण कहलाती है।

---

ज्ञान की प्राप्ति

सिद्धार्थ ने प्रारंभ में कई कठोर तप किए, लेकिन उन्हें लगा कि अत्यधिक तप या विलास—दोनों ही मार्ग मोक्ष के योग्य नहीं हैं।

उन्होंने मध्यम मार्ग (Middle Path) अपनाया — जिसमें न अत्यधिक भोग है, न अत्यधिक त्याग।

बोधगया (वर्तमान बिहार) में निर्वाण वृक्ष (पीपल वृक्ष) के नीचे ध्यान करते हुए 35 वर्ष की आयु में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

ज्ञान प्राप्ति के बाद वे "बुद्ध" (अर्थात् जाग्रत व्यक्ति) कहलाए।

---

प्रथम उपदेश

ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने सारनाथ (वाराणसी के निकट) में अपने पाँच पूर्व साथियों को पहला उपदेश दिया, जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन कहा जाता है।

यहाँ उन्होंने चार आर्य सत्यों (Four Noble Truths) और अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path) का उपदेश दिया।

---

मुख्य उपदेश

1. चार आर्य सत्य (Four Noble Truths):

दुःख है।

दुःख का कारण तृष्णा (इच्छा) है।

दुःख का निवारण संभव है।

दुःख-निवारण का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।

2. अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path):

सम्यक दृष्टि

सम्यक संकल्प

सम्यक वाक्

सम्यक कर्म

सम्यक आजीविका

सम्यक प्रयास

सम्यक स्मृति

सम्यक समाधि

---

महापरिनिर्वाण

80 वर्ष की आयु में बुद्ध ने कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में अंतिम सांस ली। इस घटना को महापरिनिर्वाण कहा जाता है।

---

बुद्ध का प्रभाव

गौतम बुद्ध ने हिंसा, जाति और अंधविश्वास के विरुद्ध करुणा, समानता और अहिंसा का संदेश दिया। उनके उपदेशों ने न केवल भारत, बल्कि एशिया के अनेक देशों (श्रीलंका, चीन, जापान, थाईलैंड आदि) को गहराई से प्रभावित किया।

---

निष्कर्ष:

गौतम बुद्ध का जीवन मानवता, करुणा और आत्मज्ञान का आदर्श उदाहरण है। उन्होंने सिखाया कि सच्चा सुख बाह्य साधनों में नहीं, बल्कि स्वयं की समझ और तृष्णा से मुक्ति में निहित है।